UNIT-01

MAY '07 2 WED

परिवार, जाति, धर्म एवं संस्कृति के द्वारा समाज में लिंग भूमिकाएँ

* लिंग की भूमिका घर एवं समाज -

1) घर एवं समाज के सशक्तीकरण के लिए सशक्तीकरण के लिए पुरुष एवं महिला लिंग का व्यवहार समानता पर आधारित होना चाहिए। पुरुष तथा महिला समाज में दो ऐसे लिंग हैं जो एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं। सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण इन दोनों लिंगों के द्वारा ही होता है, कोई भी लिंग न बड़ा है और न छोटा अथवा

3 THU

कम महत्वपूर्ण। समाज में जो व्यक्ति किसी एक लिंग के द्वारा ही होता है, कम आँकते हैं, वह वास्तव में सृष्टि के विषय में अनभिज्ञ हैं। पुरुष तथा महिला जीवनरूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, दोनों का ही जीवन को अच्छी प्रकार से चलाने के लिए महत्व है। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। जीवन की सकारात्मक उन्नति तथा समृद्धि के लिए दोनों को केवल शिक्षित होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि कुछ अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनका परस्पर अनुकूलन रहना ही अनावश्यक है। आदर्श पारिवारिक

JUN '07

M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
• • • • 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 •

Scanned with CamScanner

4 FRI MAY '07

जीवन ऐसा हो जिसमें महिला एवं पुरुष दोनों ही समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों में बंधे रहें तथा जीवन के अनुभवों से सीख लेकर आगे बढ़ें। यह तभी संभव हो सकता है जब दोनों समानता के रूप में जीवन व्यतीत करें तथा समाज इनमें असमानता व्याप्त न करे। समाज में प्रत्येक लिंग की परम्परागत रूप से भूमिका मानी जाती है। जिसमें महिला एवं पुरुष दोनों ही समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों में बंधे रहें तथा जीवन के अनुभवों से सीख लेकर आगे बढ़ें। यह तभी सम्भव हो सकता है। जब दोनों समानता के रूप में जीवन व्यतीत करें तथा समाज उनमें असमानता व्याप्त न करे।

5 SAT

समाज में प्रत्येक लिंग की परम्परागत रूप से भूमिका मानी जाती है जिसमें महिला का कार्य गृह की चारदीवारी में रहकर घर एवं परिवार की देखभाल करना तथा बच्चों को जन्म देकर उनका पालन-पोषण करना माना जाता है। यद्यपि समय बदल रहा है और महिलाओं की बढ़ती बेहतर होती स्थिति इसकी परिचायक है कि समाज में महिला को न आर्थिक शक्ति माना जाता है और न ही धन एवं सम्पत्ति में इसको हिस्सा दिया जाता है।

SUNDAY

APR '07

W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S

यहाँ तक कि शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में भी इसको समान नहीं समझा जाता है। क्योंकि सामाजिक धारणा के अनुसार स्त्रीलिंग पराया धन होती है और दूसरे के घर जाना है। इस कारण उसकी शिक्षा पर व्यय किया गया धन बेकार ही हो जाता है। पुरुष घर में ही रहता है। और माता-पिता की देखभाल करता है। इस कारण उसकी शिक्षा पर व्यय किया गया धन व्यर्थ नहीं माना जाता है। समाज में पुरुष को एक आर्थिक शक्ति माना जाता है। जहाँ उसे धनोपार्जन के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, वहीं पारिवारिक धन सम्पत्ति का वारिस भी उसी को माना जाता है। जहाँ उसे

धनोपार्जन के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं वहीं पारिवारिक धन सम्पत्ति का वारिस

भी उसी को माना जाता है। स्त्री को बाल्यकाल में पिता के अधीन, युवावस्था में पति के अधीन तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिए। इस प्रकार स्त्रियों को आदर्श, मान्यताओं, पूर्वाग्रहों और सुरक्षा की बातें पढ़ा दिया जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री-पुरुष की ओर ताकती है। तो विचारणीय ही है कि पुरुष की प्रधानता स्थापित होगी। आश्चर्य तब होता है कि जब एक स्त्री स्वयं स्त्री होकर भी बालक-बालिकाओं में भेद करती है। इस प्रकार, लिंग की भूमिका घर में मान्यताएँ तथा पूर्वाग्रहों लिंगभेद विभेद में बढ़ाने का प्रमुख कारण है।

9 MAY '07

Q2. समाज तथा समाजीकरण में लिंग की भूमिका।

विश्लेषण :- जाति - प्रत्येक जाति के माध्यम से ही समाज में लिंग भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं - जैसे - ब्राह्मण जाति में पुरोहितों का कार्य पुरुष करते हैं, महिलाएँ नहीं। शुद्र जाति में सफाई का कार्य स्त्री एवं पुरुष दोनों ही व्यक्तियाँ करती हैं। समाज में व्यापार में वैश्य पुरुष ही अधिक संलग्न देखे जाते हैं। प्राचीनकाल से युद्ध कला में पुरुषों को ही युद्ध पर भेजा जाता रहा है। जो कुछ अपवाद हैं वे इसी कारण चर्चा के पात्र हैं जो देश की आधी आबादी में अधिकांश रूप से अपने व्यावसायिक कार्यों में परम्परागत रूप से बेटे को ही महत्व देती आयी हैं। समाज में पुरुष का बेटा लुहार तथा पुरोहित का बेटा पुरोहित बनता आ रहा है परम्परागत व्यवसाय परिवार में पुत्र को हस्तांतरित किये जाते हैं, पुत्रियों को नहीं।

10 THU

सभी जातियों में महिलाओं को घर की चारदीवारी के अन्दर तक सीमित रखने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा प्रदान करने में भी सभी जातियों में दोनों लिंगों में भेदभाव किया जाता है। सभी जातियाँ तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने में पुत्रों को वरीयता प्रदान की जाती है।

APR '07